सफ़रे ज़िंदगी का

काव्य संग्रह

संतोष कुमारी 'संप्रीति'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

सफ़र ज़िंदगी का

काव्य संग्रह

संतोष कुमारी 'संप्रीति'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-070-4"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९

मोबाईल- ९४२४७६५२५९

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१९, **संतोष कुमारी**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

SHAFAR ZINDGI KA BY SANTOSH KUMARI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

जीवन से जगत तक की वाणी...

खुले पृष्ठ से खुले जज्बात तक व्यक्त करने वाला संतोष जी का यह लघु काव्य संग्रह गागर में सागर लिए, विभिन्न भावों का इंद्रधनुष है। सर्वप्रथम उनके इस भावनात्मक, निश्चल और लयात्मक प्रयास के लिए उन्हें अनेक बधाई। खुले पृष्ठ वाली उनकी दैनंदिनी उनकी यादों का भावों का संगुम्फन है। इनकी ज्ञान ज्योति समाज की समस्याओं पर प्रकाश डालती है। पीड़ा की दस्तक किस प्रकार विकल करती है, उसे वे सरल शब्दों में कहती हैं- दुख दरिद्रता साथ में लाती/औषधियों का भंडार सजाती। समाज में पनपने वाले विभिन्न रिश्तों का, उनके बदलने का उल्लेख करते हुए, अपने हमसफर के प्रति उमड़ते उनके उद्‌गार अप्रतिम हैं। मानवीयतापूर्ण अपनी अभिलाषा व्यक्त करती वे कहती हैं- रोटी, कपड़ा और मकान / आवश्यकता सबकी पूरी हो जावे। उनकी बचपन की स्मृति, दान, देशप्रेम, प्रकृति, इंसान कविता हो या प्रेमदीप सभी व्यक्तिकता और सामाजिकता का स्वर लिए हैं। जिंदगी के सफर में आने वाले विभिन्न प्रभावों को व्यथित दिल से व्यक्त करते हुए वे भूख जैसे संवेदनशील विषय पर निराला की याद कराती हैं- गरीब दो वक्त ठीक से ना खा पाता/बचपन बाल मजदूर बन जाता।

कुल मिलाकर कहें तो संतोष जी की कविताएं उनके भावों, अनुभवों, चिंतन और समाज के प्रति उनके करुणामयी दृष्टिकोण का नैसर्गिक बोलचाल की भाषा में लयात्मक स्वर है, जो रसास्वादन के साथ-साथ एक वैचारिकता भी देती है। उन्हें पुनः बधाई ।

डॉ. दीनदयाल

दो शब्द संग्रह पर

बचपन से ही कविता के प्रति विशेष रुचि थी। धीरे-धीरे यह रुचि कब शौक में रूपांतरित हो गई, पता ही नही चला। इस शौक के परिणाम स्वरूप यह हुआ कि पठन तक का सफर लेखन का सफर बन गया। प्रारंभिक स्तर पर थोड़ा संकोच मन में अवश्य था परंतु मित्रो परिचितों, साहित्यिक पटलों के साथी रचनाकारों ने मेरे इस संकोच को मेरा भ्रम मात्र ही बताया। उनकी इस प्रतिक्रिया का मेरे कविता लेखन पर बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ा। मेरी लेखनी निरंतर सृजनरत रही। माँ शारदे का वरदहस्त सदैव मुझ पर बना रहा और परिणाम स्वरूप मेरा दूसरा काव्य संग्रह 'सफर जिदगी का' आप सभी के समक्ष पुस्तक रूप लेकर प्रकाशित हुआ है। इससे पूर्व में मेरा पहला काव्य संग्रह 'मेरी काव्य यात्रा' शीर्षक साहित्य परिषद (भोपाल) द्वारा प्रकाशित हो चुका है। इस दूसरे काव्य संग्रह के विषय समसामयिक होने के साथ-साथ नयापन लिए है। हर रचनाकार का अपना एक मौलिक चिंतन एवं सृजन होता है जिसके कारण प्रस्तुतिकरण विशेष बन जाता है। कविता का भाव पक्ष अवश्य ही सुधी पाठकों को प्रभावित करेगा, ऐसी अपेक्षा करती हूँ। सुधी पाठकों की प्रतिक्रिया मेरे लेखन संसार को आगे बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। अंततः अपने शब्दों को समेटते हुए मैं अपने परम आदरणीय माता-पिता के श्री चरणों में अपना शीश नवाती हूँ जिनके संस्कारों के कारण मेरा अस्तित्व कायम है। मेरी हिंदी अध्यापिका श्रीमती जानकी देवी को श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ जिनका दिया आशीष मुझे आज भी इस मुकाम पर संबल देता है। अपनी परम सखी श्रीमती सविता मल्होत्रा के प्रति विशेष आभार प्रकट करती हूँ जिसने मुझे सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। अंत में अपने सभी सुधी पाठकों को अग्रिम धन्यवाद देती हूँ जिनकी अनुकरणीय टिप्पणियाँ मेरी इस काव्य कृति को पहचान दिलाएँगी तथा मेरे एक और काव्य संग्रह का आधार बनेंगी।

(जय माँ शारदे...)

संतोष कुमारी 'संप्रीति'
नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

1.	खुले पृष्ठ	5-6
2.	ज्ञान–ज्योति	7
3.	पीर दस्तक	8
4.	रिश्ता	9
5.	कुमकुम	10
6.	हमसफर	11
7.	अभिलाषाएँ	12
8.	स्मृति	13
9.	दान	14
10.	बचपन	15-16
11.	ना तुम अपने जज्बात लिख पाए	17-18
12.	प्रेमदीप	19
13.	महान सैनिक	20
14.	देश प्रेम	21
15.	इनसान	22
16.	सफर जिंदगी का	23
17.	अन्न कण	24
18.	बदलते रिश्ते	25
19.	बेटा–बेटी	26
20.	बीता कल	27

21.	पुराना–नया	28
22.	व्यथित दिल	29
23.	भूख	30
24.	गुलाब सी	31
25.	प्रकृति	32

खुले पृष्ठ

सलीक़े से उन्हें सहेजती जाती
रचना धर्मिता को गुहार लगाती
कोरेपन का अहसास कराते
दैनंदिनी के ये खुले खुले पृष्ठ
स्याही में जब क़लम डूब जाती
उस कोरेपन को ख़ूब धूल चटाती
क़लम की धार होती खड़ग समान
भाषा लिखित रूप पाता पहचान
स्याही का वजूद क़लम में समाता
तब दोनों का अटूट संबंध बन जाता
क़लम अब पृष्ठों पर मचलेगी
स्याही वजूद से शब्द लिखेगी
पाठक अर्थ बोध की कसौटी बनेगा
शब्दों के ताने बाने में इनको पढ़ेगा
भावों के मोती से पिरोए जाएँगे
सरोकार जन जन मुक्ताहार बनेंगे
समकालीन समाज का दर्शन होगा
विविध पहलुओं पर परखना होगा
मनोभावों की यादों के संग
वर्तमान भी पहचान बनेगा
काल करेगा भविष्यवाणी
खट्टी मीठी यादों की जुबानी
सुधी पाठक रसास्वादन करेंगे
भावी पीढ़ियों का इतिहास बनेंगे।

ज्ञान -ज्योति

ज्ञान ज्योति से आलोकित हों
पुनः चिर संचित मूल्य महान
अज्ञानता तम में आज डूबा हुआ
जीवन मूल्यों का अभिमान ।
कुल का दीपक बस बेटा ही प्यारा
मरती बेटियाँ अब भी गर्भ में
गर जन्मी तो क़हर बरपाया
गली चौराहों संस्थाओं में शोषण
बेख़ौफ हो तेजाब छिड़का जाता
कोरी स्याही से गठबंधन लिखते
दहेज प्रथा से उनके जीवन जलते
घर का खुला आँगन ना मिलता
सीमित बंद फ्लैटों मे जीवन घुटता
संयुक्त परिवार टूटे एकल परिवार
डे केयर कहो या आया संगत
बन गई घर के बच्चों की रंगत !
देश का युवा वर्ग दिशाहीन हो
चला
हुक्का पबबार फैशन आम हुआ
पुरातन संस्कृति अब हुई एथनिक
आधुनिकता का नया अर्थ खोजता
बेबस लावारिस बचपन किलकारी
अनाथालयों में खिलती फुलवारी
बड़े बुजुर्गों का वह एकाकीपन
वृद्धाश्रमों में उनका जीवन ढलता।
ज्योति ज्ञान की तुम ऐसी जलाओ
जीवन मूल्यों को प्रकाश में लाओ

पीर दस्तक

कहो काया या आंगिक पीर

उसकी दस्तक मन हुआ अधीर

पीर की अपनी जागीर

बैठे बिठाए चलते राहगीर

पीर की अपनी तासीर

इसके सम्मुख ना गरीब अमीर

सहने वालों पर होता फिदा

इसका दर्द भी सबसे जुदा

चाहत इसकी तनिक ना सुहाती

अनिच्छा भाव भावना आहत होती

दुख दरिद्रता साथ में लाती

औषधियों का भंडार सजाती

आज फिर उसको क़रीब से देखा

बदली दिनचर्या ख़ुशियों का लेखा

असह्य पीड़ा बड़ा संकट भारी

गुंफित इच्छाएँ अकालवश हारी

पीर घनेरी उकेरे संवेदना कौन?

अर्थ खोते अर्थ शब्द भी सब मौन।

रिश्ता

सृष्टि का सुंदर विधान
हर वस्तु में संज्ञा विद्यमान
पारस्परिकता का सहगान
हर रिश्ते का मिलता भान।
जन्मदाता माता पिता महान
पोषित संस्कार खिलता जहान
ज्ञान के मंदिर का आँगन
अज्ञानता तम हर लेता ज्ञान
गुरु की महिमा का होता गुणगान
शिष्य उसको सदैव देता सम्मान
हमजोली जब जाते मित्र बन
सुखद हर्षित होता तन मन
सुख दुःख जीवन कसौटी पहचान
दुख को बाँटे सच्चा मित्र महान ।
परिणय सूत्र वैवाहिक बंधन
दो अजनबी पति पत्नी जाते बन
साकार होता उनका प्रणय निवेदन
वंश अभिवृद्धि फल नामित संतान ।
जग का नियामक उच्चतम ज्ञान
दास्य भाव से धरो उसका ध्यान
करबद्ध होकर सब करो सम्मान
रिश्तों की मर्यादा गूँजे जयगान ।

कुमकुम

काजल पूरित नयन कमाल
माथे सजा कुमकुम धमाल
बना शृंगार, दृश्य अभिराम
उसके वजूद को दर्शाता
कुमकम भाग्य विधाता
सुहागिन शृंगार बन पाता
इष्ट आराध्य देवी देवता
पूजा का सजता थाल
शृंगार संग पूजन विधान
अक्षत चंदन कुमकुम बखान
सोहे कुमकुम जब इष्ट भाल
हाय! वह अभागी, वह औरत
आज उसका भाल ना सजेगा

वैध्वय उसका कुमकुम हरेगा
यह कैसी अजीब परम्परा!
यह कैसी सोच! कैसी ...
शृंगार कुमकुम ना बनेगा ???
कुंठा, नैराश्य, अवसाद विकराल
कुमकुम उसका लोकमत बवाल
सच सच तुम ही बतलाना
कुमकुम उसे सिखलाना
तुम शृंगार? तुम पूजा विधान?
अर्थ अनजान? सुहाग अभिमान ??
केवल सुहाग प्रतीक निशान...
आराध्य पूजित कोई भाल
कुमकुम लाल कुमकुम लाल...?

मेरे हमसफर

बड़ा सुंदर अल्फाज
इसकी सुंदरता का बखान
मेरे तीनों जहान कुर्बान
पंचतत्व-सा वजूद तेरा
मेरी जिंदगी को ख़ूब उकेरा
तुम अर्पण हो तुम समर्पण हो
जिंदगी के ख़्वाबों का दर्पण हो
कल्पनाओं का थामा हाथ
नव जीवन आरंभ साकार
नई पहचान नया नाम दिया
कुछ कर गुजरने का पैगाम लिया
दौर मुश्किलों का भी
माना कुछ कम ना था

पग-पग पर मिला साथ
फिर कोई गम ना था
आगे मैं बढ़ी तो मगर
तुम पल-पल मुस्कराए
मेरी उपलब्धियों पर हर्षाए
कुछ अनकहे अल्फाज
जब जुबान पर ना आए
अंतर्मन के मंथन को
तुम ख़ूब समझ पाए
तुम मेरा गीत, मेरा संगीत
तुम मेरा पर्व, मेरा गर्व
तुम मेरा सम्मान, मेरा अरमान
मेरी जीवन नैया ए मेरे हमसफर !

अभिलाषाएँ

मन के छंदों की अमल अभिलाषाएँ
शब्द कहें, मनोभाव अर्थ मुसकाएँ,
कन्या भ्रूण की हत्या ना गर्भ में होवे
बेटी पढ़े, बढ़े, नाम जग में होवे।
बेटियों का मान-सम्मान ना खोवे
उनकी अस्मत का तार-तार ना होवे
संतुलित भोजन संरक्षण सब पावे
बालक कुपोषण शिकार ना होवे ।
मासूम बचपन ना मलबा ढ़ोवे
बाल मजदूर विद्या का मंदिर पावे ।
रोटी, कपड़ा मिले और मकान
आवश्यकता सबकी पूरी हो जावे
भूखे की आँत सिकुड़ बल ना खावे
हर नेता सुनेता ना भ्रष्टाचार बढ़ावे
जनता के वायदे पूरा कर पावे ।
शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन हो जावे
जीवन मूल्य शिक्षार्थी सीख पावे ।
द्वेष ना जाति धर्म की झूठी शान
राम राज्य ऐसा बने मेरा हिंदुस्तान
अभिलाषाओं का शब्द संयोजन
सर्व मंगलम, सर्वहिताय सुखद प्रयोजन ।

स्मृति

उन मात पिता के चरणों में नमन
जिनकी बदौलत मिला मनुज तन
दादी, माँ की ममता दुलार
ग्राम्य जीवन की सुखद बयार
सखी सहेलियों का हुल्लड़पन
यौवन का नाजुक अल्लहड़पन
पेड़ की छाँव और गुरु की थपकार
विद्या के मंदिर की वह किलकार
प्रतियोगिताओं का जोर शोर
आँखों में उड़ती सपनों की डोर
थी वक्त ने जब पलटी मारी
परिणय सूत्र की आई बारी
नया माहौल कर्तव्य योग
पीछे छूट गए कुछ लोग
साँझ सवेरे ढलते चले गए
जीवन में आगे बढ़ते गए
उम्र का यह पड़ाव आज
करने लगा है भाव विभोर
बीते हुए उन लम्हों का रंग
स्मृति पटल को करता तंग

दान

दान की महिमा अपरंपार
परमार्थ भावना होती साकार
दान सदा हितकारी होता
यह पुण्य भाव कल्याणकारी होता
तजकर स्वार्थ परार्थ भाव अपनाता
पुष्ट हो जाते जीवन मूल्य हर्षाता
वह दानवीर जग में कहलाता
सबसे बड़ा विद्या का दान कहलाता
अज्ञानता हरकर ज्ञान ही फैलाता
शिष्य कुंभ गुरु कुंभकार कहलाता
निज हुनर, स्नेह से जीवन बनाता

बचपन

ग्राम्य बयार और खुला परिवेश
ना क़ाहू से ईर्ष्या ना क़ाहू से द्वेष
मासूम अबोध निश्छल बचपन
ना जाति का बंधन ना धर्म दीवार
सब लागे अपने ना कोई पराया
गलियों के वे खेल खेतों की मेंढ
रंगीन काँच के कंचे संग लट्टू डोर
भाई बहनो संग हँसना हँसाना
रूठ जाना कभी छोटों को मनाना
घड़ियाली आँसू से जिद मनवाना
माँ की ममता का वह आँचल
पिता के लाड़ प्यार का साया
माटी के चूल्हे पर बना फुल्का
माखन की परत दही का कटोरा
आँगन के पेड़ पर झूला ख़ूब खेले
स्कूल की पढ़ाई ना था बैग भारी
ना कोई ट्यूशन खुद की तैयारी
ना कोई चिंता ना मुख पर शिकन
किसी लेनदेन ना खर्चें की भनक
घोड़े बेचकर सोना सपनों की सैर
अब यौवन वृद्ध अवस्था पुकारे
बालों की सफेदी और चश्मा निहारे
मेरे बचपन मुझको तेरी
याद बहुत अब आती है
आज मुझको उसकी याद सताती
उस बचपन में मैं लौटना चाहती ।

ना तुम अपने ज़्ज्बात लिख पाए

ना हम अपने जज़्बात लिख पाए

बस कोरा कागज ही

अनगढ़े शब्दों का मर्म जानता

ना तुम लफ्जों को कह पाए

ना हम उनको सुन पाए

बस मूक भाव ही

अंतर्मन के भावों को समझता

ना तुम हमें समझा पाए

ना हम तुम्हें समझा पाए

बस समझ ही

समझौतों की समझ जानती

ना तुम वादा निभा पाए

ना हम वादा निभा पाए

बस निभाना ही

निभाने का सबब जानता

ना तुम कभी पास आए

ना हम कभी दूरी छोड़ पाए

बस दूरी ही

दूरियों का माप जानती

ना थी तेरी कोई ख़ता

ना थी मैं बेवफा

तुम भी चुप आज मैं भी चुप

तुम भी तन्हा मैं भी तन्हा

तू मेरा मौन मैं तेरा मौन

बस मौन ही आवाज बन गया ।

प्रेमदीप

तुम प्रेमदीप ही बनकर रहना
मन के भावों को आज
तुम से है कुछ कहना।
अपनी दिव्य लौ से जीवन महकाना
सब है अपने ना कोई बेगाना
तुम सब के अवसादों को हर लेना
दींन दुखी को गले लगाना
उनके अभावों को समूल मिटाना ।
मन की संकीर्ण मनोवृत्ति मिटाना
एकता अखंडता का मान बढ़ाना
प्रेमदीप तुम यूँ ही जलते जाना
प्रेम ज्योत सबके दिलो में जलाना।
देश की अक्षुण्य सभ्यता संस्कृति
परचम विश्व पटल पर लहराना
नभ तक दिव्य आलोक फैलाना
शाश्वत जीवन मूल्यों की गाथा
सदा सदा तुम कहते ही रहना ।
प्राकृतिक तत्वों की छटा बिखराना
मानव को संरक्षण का पाठ पढ़ाना
'अहं' भाव को तुम हर लेना
'हम' की परिभाषा पहचान बनाना
खुशियों से सबकी झोली भर देना
इस दीप पर्व को तुम सुखद बनाना
तुम हो मेरे प्रेमदीप बस
प्रेमदीप ही बनकर रहना।

महान सैनिक

सीमा पर पहरा दे रहा एक जवान
देश सेवा का जज्बा अद्भुत महान
देशभक्त होने का मिला सम्मान
तेरी वर्दी बन जाती तेरा अभिमान
ऊँची दुर्गम पहाड़ियाँ तेरी मचान
सजगता से रखते चहुँ ओर ध्यान
दिन का तेज ना रात्रि का होता
ज्ञान
मातृभूमि की रक्षा का एकमात्र भान
जब शत्रु से तुम्हारा होता सामना
सिंह की भाँति तुम्हारा दहाड़ना
जहाँ जहाँ तूने अपना रक्त बहाया
मातृभूमि का कण कण मुसकाया
शहादत तेरी सबका अभिमान
तिरंगे में लिपटा तेरे तन का मान
पुण्य धरा भी कृतार्थ हो जाती
माँ के दूध की लाज, पिता का मान
ए वीर जवान! तूने बढ़ा दी शान
बहन की राखी, भाई का प्यार
पत्नी का सुहाग, संतान का गरूर
देश प्रेम हित निज जीवन वारा
भारत माता का ऐसा लाड़ दुलारा
धन्य हो तुम धन्य है तुम्हारा
परिवार
तेरी जात एक है तेरा काम नेक है
तेरा एक धर्म तेरी पहचान अनेक
हैं
जय जवान,तुम आशा चमन
करती हूँ तुम्हें बारंबार नमन ।

देशप्रेम

मेरा वतन मेरा हिंदुस्तान
भौगोलिक परिवेश सुखद बखान
छह ऋतुएँ यहाँ चढ़ती परवान
ऋषि मुनियों के तप की तपन
पुण्य आत्माओं से खिला चमन
पत्थर में भी पूजे जाते भगवान
नदियाँ कहलाती यहाँ माता समान
देवतुल्य कहे जाते हैं मेहमान
वसुधैव कटुंबकम नारा महान
जग जाहिर इसका ज्ञान विज्ञान
विश्व गुरु की उपाधि बनी पहचान
धर्म, जाति भाषा ना बनती अड़चन
अनेकता में एकता कर्णप्रिय कथन

सरहद पर पहरा देते वीर जवान
फिर पाकर शहादत करते गुमान
सबसे बेहतर इसका संविधान
उद्देश्य इसका समरसता जान
लोकतंत्र है बुनियादी पहचान
मताधिकार से सम्पन्न होता मतदान
जन-गण-मन कहलाता राष्ट्रीय गान
केसरिया, श्वेत, हरे रंग का मिलन
अशोक चक्र मध्य में पाता स्थान
सभ्यता संस्कृति है शिरोमणि महान
इसकी आन, बान, शान महान
तन, मन, धन इस पर बलिदान
मेरा वतन है प्यारा हिंदुस्तान ।

इनसान

२१ वीं सदी का है तू इनसान
क्यों बनता जा रहा हैवान ?
धन का मद तुझे भरमाता
ऐशो आराम के तू साधन जुटाता
महँगी गाड़ियों में झूम जाता
फुटपाथी जिंदगी पल भर में रौंदता
पद का रूतबा तुझे हर्षाता
दुरुपयोग कर भ्रष्टाचार फैलाता
स्विस बैंक में खाता खुलवाता
अर्थव्यवस्था का मान घटाता
कर चोरी का जुगाड़ लगाता
कानून शिकंजे को धता बताता
देश विकास में बाधा पहुँचाता
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे भी जाता
आराध्य को भी रिश्वत दे आता
बूढ़े मात पिता को करके अनदेखा
वृद्ध आश्रम की चौखट छोड़ आता
जिस नारी शक्ति की बदौलत
अपनी साँसों में स्पंदन तू पाता
हत्या, अपहरण, तेजाब, बलात्कार
कुकृत्यों से उसकी कोख लजाता
इनसान बनकर ना रहे
यह तो गलत बात है
आचार विचार की उत्तमता
तेरी निशानी होनी चाहिए
इंसानियत ही इनसान की
प्रकृति होनी चाहिए ।

सफर जिंदगी का

सुख कभी दुःख के बादल गहराते
दुख आने पर घबरा क्यों जाते ?
आशा कभी निराशा के पल
जीवन में दस्तक दे जाते
निराशा से तब आहत क्यों होते ?
कभी जीत से तो कभी हार से
जीत का जश्न मनाते जताते
पर हार से व्यथित क्यों होते ?
लाभान्वित होते कभी लाभ से
कभी हानि से भी टकरा जाते
डरकर हानि से बिखर क्यों जाते ?
जीवन की इस रणभूमि में
इन सबसे सामना सबका होता

सुखद पक्ष तो हर कोई भोगे
दुखद पक्ष में धैर्य क्यों खो जाता ?
जिंदगी जीना आसान नही होता
समझो ताउम्र इम्तिहान सा होता
चाहे संघर्ष का हो विस्तृत मैदान
या काँटों से भरा हो दामन
प्रत्यक्ष अभावों का भयावह कंकाल
या चुनौतियों का हो मकड़जाल
बुजदिली जिंदगी को ना भाती
जिंदादिली ही बनती थाती
जिंदगी की नई कहानी लिख पाती
सफर जिंदगी का सुगम बनाती ।

अन्न कण

ख़ुशियों के पल लगते खिलखिलाने
उनको गुनगुनाने मन ढूँढता बहाने
घर कभी दफ्तर में आयोजन होते
खानपान की लम्बी लिस्ट बनाते
जी भर खाते जी भर लुटा देते
मद में झूम बस मौज उड़ाते
कितना खाया कितना व्यर्थ गँवाया
किसकी बुद्धि ने कहो चेताया ???
मैं अक्सर देखती हूँ ऐसा नजारा
मन व्यथित होकर बस रह जाता
विवेक का कहीं दर्शन ना हो पाता
शिद्दत से किसान अन्न उगाता
श्रम की बूँदे बोकर उपजाता
भोजन का एक एक कण कहो
कितना मूल्यवान बन जाता ???
कितनों का निवाला वंचित होता
वह किसी की भूख मिटाता
उस दुआ का फल हमें मिल पाता !!
उस किसान के अन्न कणों को
शायद मान-सम्मान मिल पाता ।

बदलते रिश्ते

रिश्तों का भी एक मुक़ाम होता है
हर रिश्ते का एक निज नाम होता है
रिश्तों से रिश्तों से सरोकार होता है
रिश्तों से रिश्तों का सत्कार होता है
कुछ कहलाते ख़ूनी तो कुछ सहमति से उपजते
निभ जाते कुछ बस दिखावा होते
ये रिश्ते बनते बिगड़ते रहते हैं..
फिर भी ताउम्र चलते रहते
भानुमति पिटारे-से होते हैं
वक्त के पहरे में रिश्ते दस्तक देते
निभाने वालों के भाल ऊँचे हो जाते
दुख आने पर करे किनारा वे रिश्ते धागे-से वे कच्चे होते हैं
सुख दुःख के रिश्ते कहलाते हैं
अहम कभी वहम से रिश्ते बिखराते
आपाधापी के इस युग में मौन सिसकियाँ भी लेते हैं
स्वार्थों की अंधी दौड़ में शामिल होकर जो रिश्ते मचलते
पग पग पर देखे मैंने ऐसे बदलते कंगूरी झूठे रिश्ते !!!!!

बेटी-बेटा

एक ही माँ की दोनो संतान
बेटी-बेटा मानो एक समान
इन दोनो से पूरा परिवार
माता-पिता स्नेह देते वार
ये दोनों घर का शृंगार
किलकारियों से गूँजे आँगन द्वार
बेटी आँगन की फुलवारी
बेटा कुल की शोभा न्यारी
एक सा इनका पालन पोषण होता
निज भाग्य से जीवन खिलता
बेटा सबकी आँखो का होता तारा
बेटी पर हर सुख दुःख में सहारा
बेटा अपने कुल की बढ़ाता मान
पर बेटी दो कुलों की बढ़ाती शान
आज की बेटी बेटों पर भारी
इनकी प्रतिभा सभी ने स्वीकारी
बेटी होकर बन दिखलाए बेटा
क्या बेटी-सा बन सकता बेटा?
ज्ञान विज्ञान में ना बेटी कम
बेटों की बराबरी करने का दम
विश्व पटल पर आज छाई है बेटी
बन रही चाहत काश! मेरी भी हो एक बेटी ।

बीता कल

ऐ बीते कल! तू बहुत याद आएगा
जिंदगी गुजर रही या कट रही
कहने का हौंसला कहाँ से आएगा ?
जो हुआ, जैसा हुआ सामना किया
इसी को जिंदादिली मैंने नाम दिया
कुछ अच्छा कुछ अप्रत्याशित घटा
किसी से ना शिकवा ना कोई गिला
कुछ सपने बुने अरमानों की भेंट
चढ़े
ख़ुद को बनाया तो कभी मिटाया
बनने बिखरने का दौर याद आएगा
अपना रूठा तो अपना मना लिया
उस अहसास को साकार बनाया
कभी हँसे कभी रोना भी आ गया
मगर आँख के आँसू को कभी
गैरों को ना दिखने दिया
हसरतों का दामन ख़ाली-सा रहा
चेहरे पर शिकन साया ना दिया
समय को मैं बस निरखती रही
एक अजीब सा द्वंद्व निर्बाध
उसके थे अपने दाँवपेच
मुश्किल था करना भेद अभेद
हारने हराने का शीतयुद्ध चला
अंतर्वेदना का मर्म बताया नही
समय बेरहम ने धीरज बँधाया नही
सुनो प्रिये! मेरा आगामी कल
तेरे बीते कल से होगा जुदा ....।

पुराना -नया

व्याकरण नियम बोध कराता
पुराना नया विलोम शब्द बताता
जिंदगी उसूल सहमत ना हो पाया
पूरकता की एक मिसाल बनाया
यदि पुराना एक पेड़ कहलाए
तो नया उसकी छाया बन जाए
यदि पुराना एक कली बन जाए
तो नया पुष्प बनकर खिल जाए
माना पुराना है जाने को अब
तैयार
नया हो रहा है आने को बेक़रार
पुराना अनुभवों का बही खाता
नए को बहुत कुछ है सिखाता
पक्ष की जुड़ी यादें, घटनाएँ जुटाता
शालीनता से नया परिचय पाता
उसने जो खोया, चाहकर ना पाया
नए को इसका बख़ूबी भान कराया
पुराना नए का हितैषी यह जतलाता
भावी पक्ष की बारीकियाँ सिखाता
नया तो नौसिखिया कहलाया
ख़ुद बनाने पुराने से हाथ मिलाया
क्या करना है? कैसे करना है ?
यह सब पुराने से सीख पाया !
पुराना नए में अस्तित्व देखता
नया पुराने का वजूद सहेजता
पुराना ज्ञानार्जन समेटता
नए को प्रेरणा का भार सौंपता..

व्यथित दिल

लूटपाट, हत्या, डकैती, अत्याचार
बेईमानी, भ्रष्टाचार का भीषण कार
श्रमजीवी, ईमानदार ख़ूब पिस रहे
धनिकों की तिजोरी नाख़ून घिस
रहे
झूठ, फरेब, धोखाधड़ी, बेईमानी
मात्र यही रह गई निशानी !!
आचार-विचार के बदलते रंग- ढंग
मूल्यों की आचार-संहिता हुई भंग
परिवार विखंडन बदस्तूर जारी...
समझौतों की नही आती बारी !!!
घर के वृद्ध तीर्थधाम जाते बिसराए
बोझ जान वृद्धआश्रम छोड़ आए
आधुनिकता पर उच्छृंखल होते
मानवीय मूल्यों की दुहाई दे रोते
नारी सौंदर्य को नुमाईशी बनाया
मिस यूनिवर्स का लेबल लगाया
मनुष्य बुद्धि ने तो कमाल कर
दिया
प्रकृति खिलवाड़ बवाल मचा दिया
पौधों जीवों का ध्यान तज दिया
विकास, शहरीकरण नाम दे दिया
हृदय धमनियों में प्रदूषण फैल रहा
नित नए नए रोगों से सामना हो
रहा
स्वार्थ वैशाखी परमार्थ कुचल रही
ऐसा घटित हो रहा हमारे आसपास
व्यथित चोटिल दिल रहता उदास ।

भूख

उदर अग्नि स्वयं में अहसास
कराती
भूख का नाम निज बोध कराती
सापेक्षता से मिली इसको स्वीकृति
भूख हर एक जीव जंतु की प्रकृति
ना इसका धर्म सम्प्रदाय से नाता
जात बिरादरी कोई ना बता पाता
पक्षियों को भी प्रयास करना पड़ता
आकुल उड़ान भर उड़ना पड़ता
चोंच भर दानों को खोजना पड़ता
मृत जीव नोचना उचित लगता
मनुष्य को मयस्सर ना होती रोटी
दिन रात कमाकर खाना कसौटी
अमीरों का चूल्हा दिन रात जलता
मगर गरीबों का हाशिए पर रहता

अमीरी की भूख मसला कठिन नही
छप्पन भोग लगाकर ठाठ से सोता
गरीब दो वक्त ठीक से ना खा
पाता
बचपन बाल मजदूर बन जाता
कोई नट जान जोखिम में डालता
जीवन अपना खुद दाँव पर लगाता
काँपते नसों वाले हाथ काम खोजते
किसी रहम कर्म भूख बिलखती
आँते सिकुड़कर पेट पीठ एक जाते
कभी मृत्यु का ही ग्रास बन जाते
भरण पोषण जब लगे कष्टकारी
हाथ भीख ही लगती लाभकारी
भोजन की बर्बादी कहलाती विकृति
मिलजुल बाँटकर खाना संस्कृति ।

गुलाब-सी

निशा अंधकार अब छँटने लगा
पर्वतों की ओट से सूरज दमक
रहा
निशा स्वप्न को भुला चुकी
तंद्रालस को त्याग चुकी
जीवन में उजली किरणे आई
दिव्य रश्मियों से ऊर्जित हूँ मैं
नव विहान के स्वागत में तत्पर
ऊँचाइयों का आसमान छूने चली
ना थकी घने अंधेरों में
खोजकर पा लेती हूँ निज पथ
आत्मविश्वास ना डगमगाएगा
मेरी पहचान कहानी बन जाएगा
इतिहास के स्वर्णिम पन्ने खुलेंगे
फिर से कोई इतिहास रचा जाएगा
तब की अबला नही सबला हूँ मैं
नव युग में भी संस्कारिणी हूँ मैं
कर्तव्यों की बोधिनी पोषिका
ममता, त्याग, स्नेह की प्रतिमूर्ति
मेरी कोमलता मेरी कमजोरी नही
कहो उत्साही वही अपराजिता हूँ मैं
खुद के बलबूते शिखरों पर चढ़ी
जीवन में आगे आगे ही बढ़ी
मेरा स्वाभिमान अहंकार ना बताओ
आगे बढ समरसता भाव जगाओ
सर्वत्र गुलाबी परिवेश है मेरा
खिले गुलाब सी खिली हूँ मैं ।

प्रकृति

पेड़ प्रकृति का सुंदर उपहार
मानव अज्ञानता संग साक्षात्कार
हरा भरा मैं रहता हूँ
फल फूल तुझे देता हूँ
थके पथिक को छाया भी देता
पर बदले में कहो क्या कुछ लेता ?
तुम्हें जीवनदायिनी वायु भी देता
तेरी साँसों की डोरी भी झलता
मानव होकर पशु प्रवृत्ति दिखलाता
स्वार्थलिप्सा में निज हित बिसराता
लिया कुलहाड़ा ना तनिक विचारा
मेरे अस्तित्व को मिटाने तू आया
भयातुर आत्मा मेरी चीत्कार उठी
पीर घनेरी आहत हो पुकार रही
मेरा क़सूर तुम इक तो बतलाओ
होने वाली कोई हानि तो गिनाओ ?
मुझे काटोगे तुम क्या पाओगे ?
बिन ऑक्सीजन जिंदा रह पाओगे
जीवन ख़ुद अपने हाथों मिटा रहे
मुझको निर्ममता से यूँ काट रहे ?
प्रदूषण की मार अभी जो झेल रहे
भावी पीढ़ी हित पीछे धकेल रहे
मानव तू तो कहलाता बड़ा ज्ञानी
उपादेयता तूने अब तक ना जानी !
मेरे अपने प्रश्न है बहुतेरे
पर तूने जवाब दिए ना पूरे !!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम : **संतोष कुमारी**

उपनाम : संप्रीति

जन्म : २८ मई १९७२, हरियाणा

ईमेल : ms.santosh1972@rediffmail.com

चलभाष : ९८७१३८२४४०

कर्मभूमि : दिल्ली

अभिरुचि : लेखन, गायन, नृत्य

शौक : कविता लेखन

शिक्षा : एम.ए.,एम.फिल., बी.एड.

सम्प्रति : टी.जी.टी. मॉडर्न कॉन्वेंट स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली-११००७८

अनुभव : १५ वर्षों का अध्यापन

उपलब्धियाँ : (१) समाचार पत्र- उदय प्रताप, ज्ञान सवेरा- कविताएँ प्रकाशित (२) द्वारका रामलीला पत्रिका-लेख प्रकाशित (३) ज्ञान सवेरा, अणुव्रत, मधुसंबोध, कहानी एवं काव्य संग्रह/हिंदी विकास मंच, साया पत्रिका में कविताएँ प्रकाशित । (४) साँझा कविता संकलन-साहित्य पीडिया काव्य संग्रह 'माँ', भावों की बरसात, (५) एकल काव्य संग्रह- 'मेरी काव्य यात्रा', विशेष- लगभग ४०० कविताओं का लेखन, खंडकाव्य (प्रकाशाधीन)

सम्मान : (१) राष्ट्रभाषा गौरव पुरस्कार तथा ४५०० नक़द ईनाम राशि (महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा विकास परिषद) (२) अभिनय उत्कृष्टता २०१८, २०१९ (नॉलेज ३६० **NGO**), (३) अत्युत्तम पुरस्कार (स्कूल स्तर पर), (४) भाषा गौरव शिक्षक पुरस्कार-२०१८, २०१९ (हिंदुस्तानी भाषा अकादमी), (५) कविता, क्षणिका, हाइकु, वर्ण पिरामिड, ताँक़ा आदि विधाओं में लेखन एवं पुरस्कार प्राप्ति, (६) महादेवी वर्मा कविता गौरव सम्मान।

सामाजिक गतिविधियाँ: सर्व सेवा संस्थान (सचिव पद पर कार्यरत), वित्तीय सहायता, रक्तदान, स्वास्थ्य शिविर में सहभागिता, (२) सुभाषी फाउण्डेशन- दक्षिण पश्चिम शिक्षक क्लब की अध्यक्षा, (८) साहित्यिक पटलों पर लेखन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-070-4
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध